www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 25
सृष्टि संवत् 1960853114
22 सितम्बर 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-70, अंक : 25, 19/22 सितम्बर 2013 तदनुसार 7 आश्विन सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

श्री आशानन्द जी आर्य नहीं रहे

वयोवृद्ध आर्य नेता श्री आशानन्द जी आर्य का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 15 सितम्बर 2013 को उनके बड़े सुपुत्र श्री वेदप्रकाश जी आर्य के निवास स्थान गुडगांव में देहावसान हो गया। उनकी अन्तिम शोक सभा दिनांक 17 सितम्बर 2013 को गणपति सोसायटी सैक्टर 56 गुडगांव में 3 से 4 बजे तक सम्पन्न हुई। पूज्य श्री आशानन्द जी आर्य 85 वर्षों तक आर्य समाज के साथ जुड़ें रहे। उनका जन्म पश्चिमी पाकिस्तान के एक छोटे से कस्बे कमालिया जिला लायलपुर में 1 जनवरी 1913 को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भी कमालिया के एक सरकारी स्कूल में हुई। 1927 ईस्वी को आपको आर्य युवक सभा के सदस्य बनने की प्रेरणा मिली। आप आर्य युवक सभा के कार्यों से बहुत प्रभावित हुये। इसी प्रकार आपकी आर्य समाज के प्रति विशेष आस्था जागृत हुई। दसवी कक्षा तक अपने पैतृक कस्बे में शिक्षा प्राप्त कर आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये लाहौर में अपने बड़े भाई के पास आ गये। लाहौर में आकर आप आर्य समाज बच्छोवाली के सत्संगों में जाने लगे जिससे आप में वैदिक संस्कृति की विशेष आस्था जागृत हुई।

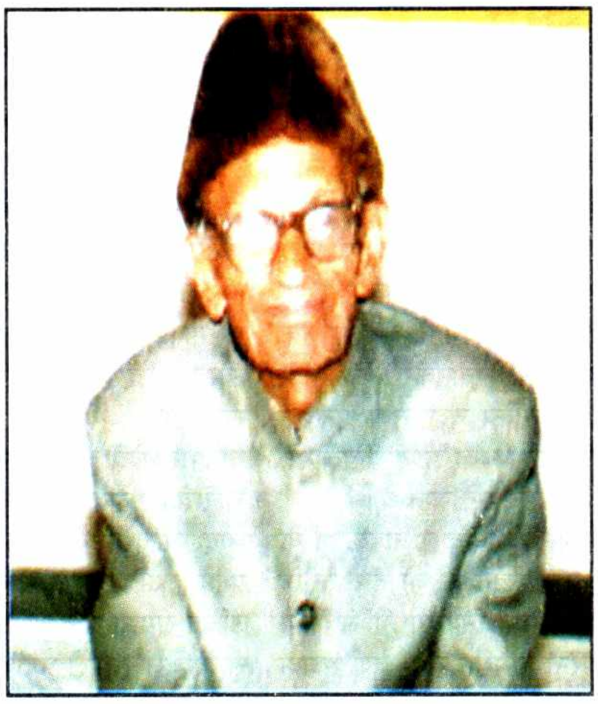

पाकिस्तान बनने के बाद आप कुछ समय तक फाजिल्का में रहे और उसके बाद लुधियाना में आकर बस गये। आप आर्य समाज के दीवाने थे। आपने लुधियाना आकर आर्य समाज की खोज की और आप को यहां आकर पता चला कि लुधियाना में तीन आर्य समाजें हैं। आर्य समाज साबुन बाजार, आर्य समाज दाल बाजार और आर्य समाज हिन्दी बाजार। आप आर्य समाज दाल बाजार नियमित जाने लग गये। आप बहुत ही कर्मठ और पुरुषार्थी व्यक्ति थे। लुधियाना में आपने आर्य समाज का बहुत कार्य किया। लुधियाना में सभी आपको प्यार से पिता जी कह कर बुलाया करते थे।

1957 में आपने हिन्दी सत्याग्रह में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। आप लुधियाना में आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी थे। इस प्रकार आर्य समाज का प्रचार प्रसार करते हुये आपने अपने बच्चों को भी बहुत अच्छी शिक्षा दी। बच्चों को बहुत अच्छी तरह से सुसंस्कारित किया। यही कारण है कि आपके बच्चे भी बहुत बड़े बड़े पदों से सेवानिवृत्त हुये हैं। आर्य समाज के कार्यों में आपकी धर्मपत्नी माता धर्मदेवी आर्या जी का भी बहुत बड़ा योगदान है। आपका जीवन हमेशा सादा जीवन रहा और आप ने अपनी परवाह किये बिना आर्य समाज के कार्यों को प्राथमिकता दी। आप इस आयु में भी देश के भिन्न भिन्न हिस्सों में चल रहे गुरुकुल अनाथालयों और सभी संस्थाओं को दान इकट्ठा करके देते रहे। ऋषि जन्म भूमि टंकारा से आप का विशेष स्नेह रहा है। इन्हीं सराहनीय कार्यों से प्रभावित होकर टंकारा ट्रस्ट की ओर से आपको टंकारा रत्न के विशेष अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपके जीवन की विशेषता रही है कि आप ने हमेशा व्यक्ति के गुणों को देखा है अवगुणों को नहीं। आपका मानना था कि जो व्यक्ति काम करता है उससे गलती हो सकती है लेकिन आप उनकी गलतियों को न देखते हुये उसके गुणों को देख कर आशीर्वाद देते रहे।

1976 में आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मंत्री चुना गया। तब से लेकर आज तक आप सभा से जुडे रहे। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में अधिष्ठाता आर्य वीर दल, उप प्रधान और मंत्री पदों को सुशोभित किया और वर्तमान में आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान थे। उनके चले जाने से आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति हुई है जिसकी भरपाई करना असंभव है। मैं अपनी ओर से, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से और पंजाब की समस्त आर्य समाजों की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूं। आप हमेशा हमारी प्रेरणा बन कर जीवित रहेंगे।

-सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

www.thearyasamaj.org

नामकरण संस्कार और नाम के साथ वर्ण आदि का प्रयोग

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

'संस्कार विधि' गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों का यथा समय करने हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्मित एक प्रमुख ग्रन्थ हैं जिसमें संस्कारों का प्रयोजन, अभिप्राय व विधि भाग दिया गया है। दुनिया में अनेकानेक मत, मजहब, सम्प्रदाय आदि हैं परन्तु ऐसा सारगर्भित, वैज्ञानिक सोच रखने वाला तथा सन्तानों के जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु पर्यन्त उनकी आत्मा व शरीर को सुसंस्कृत करने वाला इसके समान दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है। 16 संस्कारों में 'नामकरण संस्कार' एक प्रमुख संस्कार है जो संसार के सभी मत, मजहब व सम्प्रदायों में भिन्न-भिन्न प्रकार से व अपने-अपने रीति रिवाज के अनुसार किया जाता है। यहां यह भी लिख दे कि आर्य समाज वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को मानता है जिसके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र चार वर्ण हैं और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास चार आश्रम हैं। आजकल इस सारी व्यवस्था में गड़बड़ घोटाला है। प्राचीन वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव व योग्यता के अनुसार थी परन्तु आजकल की व्यवस्था इसके विपरीत 'अवैदिक वर्ण-संकर व्यवस्था' है। अब यह जन्म से बना दी गई है। पात्रता का माप-दण्ड समाप्त कर दिया गया है। हमें लगता है कि हिन्दू समाज की आज जो दीन-हीन दशा है, वह मुख्यत: इसी कारण से है। आईये, हम अपने मुख्य विषय 'नामकरण संस्कार' पर आते हैं

मनुष्य का पहला जन्म अपनी माता से होता है और दूसरा जन्म आचार्य के गुरूकुल से शिक्षा पूरी करने के पश्चात् होता है। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति की द्विज संज्ञा है जबकि शिक्षाहीन या शिक्षा से रहित मनुष्य की शूद्र संज्ञा है। पहले जन्म होता है, शिक्षा का स्थान जन्म लेने के बाद आता है। जन्म के पश्चात जो मुख्य संस्कार होता है उसमें नामकरण संस्कार मुख्य है। संस्कार विधि के अनुसार यह संस्कार जन्म के 11वें दिन, 101 वें दिन या दूसरे वर्ष के आरम्भ में करने का विधान है। महर्षि दयानन्द संस्कार विधि में विधान करते हैं कि पुत्र का नाम दो अक्षर का वा चार अक्षर का घोषसंजक और अन्त: स्थ वर्ण अर्थात् पांचों वर्गों के दो-दो अक्षर छोड़ कर तीसरा, चौथा, पांचवा और य, र, ल, व ये चार वर्ण नाम में अवश्य आवें। पुरूषों के नाम जैसे भद्र:, भद्रसेन:, देवदत्त:, भव:, भवनाथ:, नागदेव:, रूद्रदत्त:, हरिदेव: आदि पुरुषों का समाक्षर नाम रखना चाहिये तथा स्त्रियों का विषमाक्षर नाम रखें। अन्त में दीर्घ स्वर और तद्धितान्त भी होवे-जैसे श्री:, ह्री, यशोदा, सुखदा, गान्धारी, सौभाग्यवती, कल्याणक्रोडा आदि। आगे वह कहते हैं कि पुरुषों के नाम जैसे देव अथवा जयदेव, ब्राह्मण हो तो देवशर्मा, क्षत्रिय हो तो देव वर्मा, वैश्य हो तो देवगुप्त और शूद्र हो तो देवदास इत्यादि। स्त्रियों का नाम-एक, तीन वा पांच अक्षर यथा श्री, ह्री, यशोदा, सुखदा, सौभाग्यप्रदा इत्यादि रखने का विधान उन्होंने किया है। यह नाम रखने की विधि महर्षि दयानन्द ने लगभग डेढ़ शताब्दी पहले उस समय की थी जब हमारा भारतीय हिन्दू-पौराणिक समाज बच्चों के नामकरण के संस्कार को विस्मृत कर चुका तथा अनर्थक व बेसुरे नाम यथा झण्डू, खिलाड़ी, घसीटा आदि रखे जाते थे।

महर्षि दयानन्द ने नामकरण के लिए नाम रखने के जो तौर-तरीके सुझायें हैं वह निश्चय ही सर्वोत्तम है। परन्तु नाम के साथ वर्ण सूचक शर्मा, वर्मा, गुप्त व दास का प्रयोग किया जाना हमें शास्त्रीय दृष्टि से उपयुक्त प्रतीत नहीं हो रहा है। हम अनुभव करते हैं कि जन्म से तो सभी शूद्र हैं अत: जिस बालक या बालिका का नामकरण 11 वें, 101 वें दिन या दूसरे वर्ष में किया जाता है, उस समय वह शूद्र श्रेणी में होता है।

अत: उस समय इन वर्ण सूचक उपनामों व शब्दों का प्रयोग बच्चों के नाम के साथ नहीं किया जाना चाहिये। इससे आगे चलकर उपनयन व वेदारम्भ संस्कार के समय एक बड़ी समस्या भी सामने आती है। कारण यह है कि क्या गुरूकुल में अध्ययन काल में यह वर्ण सूचक शब्द भी प्रयोग में रहेंगे या आचार्य इन्हें हटा देगा ? यद्यपि हटाये नहीं जाते परन्तु यदि हटा भी दें तो बालक-बालिकाओं को अपने-अपने वर्णों का ज्ञान होने से यह उनकी शिक्षा में बाधा पैदा करता है। मान लीजिए कि एक बालक को पता है कि वह जन्म से नाम के साथ शर्मा शब्द का प्रयोग करता आ रहा है और गुरूकुल में भी इसका प्रयोग जारी रहता है तो स्वाभाविक रूप से वह स्वयं को ब्राह्मण परिवार से आया हुआ मानेगा। दूसरे बच्चे अन्य वर्णों के हैं जो इसी प्रकार से अपने-अपने वर्णों को जानते हैं। जब भिन्न-भिन्न वर्णों के बच्चे एक साथ व्यवहार करेंगे तो उनके मनों में इस प्रकार के विचारों के कारण मित्रता करने व अध्ययन करने में बाधा उत्पन्न हो सकती है। यदि नामकरण संस्कार में ही वर्ण सूचक शब्दों का प्रयोग किया जायेगा तो समावर्तन संस्कार के अवसर पर उनकी योग्यता अनुसार आचार्य द्वारा वर्ण निर्धारित करने पर, यदि वर्ण को बदलना पड़ता है तो, विरोध हो सकता है और नया निर्धारित वर्ण प्रयोग में आना कठिन होगा। अत: हमें लगता है कि जन्म के बाद घर पर माता-पिता द्वारा नामकरण करते समय बच्चे के नाम के साथ वर्ण सूचक शब्दों यथा शर्मा, वर्मा, गुप्त वा दास शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। गुरूकुल में अध्ययन के बाद आचार्य वर्ण निर्धारण की प्रक्रिया अवश्य करें और यदि यह उचित समझा जाये तो उसे गुरूकुल से दिए जाने वाले प्रमाण पत्र में भी अंकित कर दें। सैद्धान्तिक दृष्टि से पुष्ट होने के कारण इसके विरोध का प्रश्न नहीं है। परन्तु जब तक सामाजिक वातावरण नहीं बदलेगा, इसका व्यवहार में आना दुष्कर है। अत: आज की परिस्थितियों में, अनुपयोगी, हानिकारक व महत्त्वहीन होने के कारण स्नातक होने से पहले व बाद में भी वर्ण या जातिसूचक शब्दों का प्रयोग उचित नहीं है। बहुत से लोग करते भी नहीं है। हमें लगता है कि ऐसे लोग वर्ण व जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करने वाले लोगों से कहीं अधिक बुद्धिमान व वैदिक धर्म व संस्कृति को समझने वाले हैं। आजकल इनका प्रयोग मुख्यत: परम्परा के निर्वाह या अज्ञानता के कारण किया जाता है। एक अन्य कारण अपने बड़प्पन, अहंकार या फिर इसी प्रकार की मानसिक भावनाओं के कारण है। ऐसा हम इसलिए कह रहे हैं कि वर्ण व जाति सूचक शब्दों का प्रयोग जन्म के आधार पर है जिसका पात्रता, योग्यता, गुण, कर्म व स्वभाव से कुछ सम्बन्ध नहीं है। समाज में एकरूपता, एक-रसता, समानता के लिए नाम के साथ किसी प्रकार के जाति या वर्णसूचक उपनाम का प्रयोग न करने के विरूद्ध प्रचण्ड सामाजिक चेतना की आवश्यकता है।

हम यहां सत्यार्थ प्रकाश से महर्षि के कुछ कथन दे रहे हैं जो यह प्रतिपादित करते हैं कि अध्ययन काल में किसी भी विद्यार्थी के साथ असमानता का व्यवहार न हो 'सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सब को तपस्वी होना चाहिये। उनके माता-पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार एक दूसरे से कर सकें, जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें। जब भ्रमण करने को जायें तब उनके साथ अध्यापक रहें, जिस से किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें।' यह विचार बालकों में समानता व सहृदयता स्थापित करने के द्योतक हैं। उदाहरण के लिए हम अग्निहोत्र की समिधाओं को ले सकते हैं अग्निहोत्र में नाना प्रकार की सूखी व शुद्ध समिधाओं को मिलाकर यदि यज्ञ-कुण्ड में डालते हैं तो सभी समिधायें अपनी पूरी क्षमता से मिलकर जलती हैं और हव्य को सूक्ष्म बनाकर सभी देवताओं को पहुंचाने में सहायक होती है। इसी प्रकार गुरूकुलों व सभी प्रकार की शिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थियों को अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि को भूल कर परस्पर घुल-मिल कर व एक दूसरे से पूर्ण सहयोग करते हुए विद्याग्रहण के उद्देश्य की पूर्ति करनी चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति में शिक्षा-अध्ययन काल में जाति व वर्ण सूचक शब्दों का प्रयोग न करना ही उचित एवं उपयोगी है। अत: इसका पालन व व्यवहार किया जाना चाहिये।

हम आर्य जगत के विद्वानों से निवेदन करते हैं कि वह इस विषय पर अपने अनुभव से हमें व आर्य जनता को लाभान्वित करें।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

हमारा मन शुभ संकल्पों वाला हो

हमारा मन जब एक विषय में तृप्ति नहीं पाता तो वह भागकर नये विषयों को पकड़ता है। जब उसमें भी शांति नहीं मिलती तब तीसरे विषय की ओर दौड़ता है। इस प्रकार यह मन इधर-उधर भटकता रहता है, मानो उसकी कोई अमूल्य वस्तु खो गई हो, जिसका पाना उसे आवश्यक है और जिसके बिना उसका कार्य चल नहीं सकता। हमारे चंचल नेत्र इस संसार में प्रायः अनेक प्रकार के दृश्य देखते हैं, जिससे उनका प्रभाव मन पर पड़ता है। देखा गया है कि जीवन की बहुत सी घटनाओं, दृश्यों, परिस्थितियों में मन लगा रहता है परन्तु बहुत से ऐसे विषय भी हैं जिनसे जल्दी ही पीछा छुड़ना चाहता है। अतः मन को एक सुन्दर, उपयोगी और कल्याणकारी विषय पर टिकाए रखना संयम की अपेक्षा सुगम है। अभ्यास में सिद्धि प्राप्त करने के लिए जिज्ञासु को सर्वप्रथम इसी साधना का आश्रय लेना चाहिए।

यदि हम अपने मन को उन्नति की तरफ ले जाना चाहते हैं तो हमें महान चरित्रों, गीता, रामायण या किसी अन्य श्रेष्ठ विषय को सामने रखकर अपने मानसिक जगत् में स्थिर करें, उसी में देर तक स्मरण करें, वही मानसिक वातावरण बनाए रखें तो उन्नति हो सकती है। धीरे-धीरे वही भाव मन में स्थिर हो जाते हैं। इस रीति से मन एक मार्ग पर एकाग्र हो सकता है। जैसे-जैसे वह मानसिक एकाग्रता, चरित्र और भाव मजबूत होते जाएंगे वैसे-वैसे मन सरलतापूर्वक एकाग्र होने लगेगा। जीवन की किसी मनोहर सुन्दर घटना को मानसिक जगत् में उपस्थित करके चित्त का संयम जितना हो सकता है, उतना किसी अन्य पुस्तक को पढ़ने से नहीं हो सकता। जिन लोगों ने मन का साधन आरम्भ कर रखा है, उनकी प्रायः ये शिकायत रहती है कि संयम के साधन का यत्न करने से चित्त की चंचलता और भी बढ जाती है। वे कहते हैं कि हम मन को एकाग्र करना चाहते हैं लेकिन वह नहीं होता। कुछ अंशों में यह शिकायत ठीक है, परन्तु वास्तव में देखा जाए तो उनका साधन ही गलत है,क्योंकि वे एक म्यान में दो तलवारें रखने का प्रयास करते हैं। एक विषय को पकड़े हुए हम दूसरे विषय को नहीं पकड़ सकते। एक साथ ही हम दो नावों में नहीं बैठ सकते। हम प्रायः देखते हैं कि जहां बहुत शोर हो रहा हो या परस्पर तीन चार मनुष्य एक साथ बोल रहें हो तो हमें सभी मनुष्यों की बात एक ही समय में नहीं सुनाई पड़ती, क्योंकि हमारा मन सदा एक ही विषय को देखता, सुनता और विचार करता है। अतः इससे यह सिद्ध होता है कि हमारा चित्त सदैव एक ही विषय को पकड़ता है, पर कठिनाई यह है कि वह अधिक काल तक उस पर स्थिर नहीं रहता। इसलिए जब तक हम एक मुख्य बात को जो हमारे चित्त में जमी हुई है उसे न छोड़ दें तब तक चित्त दूसरे विषय में स्थिर नहीं हो सकता। जो विषय उपयोगी है, जिनसे वास्तव में हमारा सच्चा लाभ हों सकता है, जो हम अध्ययन कर रहें हैं, उन्हीं पर मन को एकाग्र करना चाहिए। इस प्रकार हम मन को उस परमात्मा से जोड़ सकते हैं।

उदाहरण के लिए जब बालक रोता है उस समय यदि हम उसे भय दिखाएं कि चुप हो जा नहीं तों पीटेंगे, तो शायद ही वह चुप हो , परन्तु इसकी अपेक्षा और भी अच्छा साधन उसको चुप कराने का यह है कि उसे कोई खिलौना दे दिया जाए, मिठाई दे दी जाए या अन्य पदार्थ जो उसे पसन्द हो तो वह धमकाए जाने की अपेक्षा जल्दी चुप हो जाएगा। यही हाल हमारे मन का भी है। इसके विषय में श्रीकृष्ण महाराज ने जो कुछ कहा है, वह महत्वपूर्ण है-

अशंसयं महाबाहो मनोदुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

अगर हम अपने मन को वश में करना चाहते हैं तो हमें दृढता के साथ उन संकल्पों पर दृष्टि रखनी चाहिए जो चित्त में सदा प्रवेश करते रहते हैं। उनमें से केवल शुभ और उत्कृष्ट संकल्पों को ही अपनी इच्छानुसार संग्रह करते रहना चाहिए। यह तभी होगा जब सदा शुभ संकल्पों को ग्रहण करने का ध्यान रहे। इससे अशुभ संकल्प आप ही न फटकने पाएंगे। इसमें अभ्यास ही प्रमुख बात है। अभ्यास से हमारा मन बलवान् होगा। हम पर दूसरों के बुरे विचारों तथा गालियों का प्रभाव न पड़ेगा। बहुधा लोग अशुभ विचारों तथा अप्रिय अवस्थाओं का ही चिन्तन करते रहते है और उनसे अपना पीछा छुडाने के लिए युद्ध करते रहते हैं। रोगी मनुष्य यदि रोग का ही चिन्तन करता रहे तो वह कदापि स्वस्थ नहीं हो सकता चाहे कितनी ही औषधियों का सेवन करें। इसके विपरीत यदि वह दृढ संकल्प वाला होकर अपने ही संकल्पों को बलवान् रखकर मन की चंचलता पर संयम करके पूर्ण स्वस्थ तथा आनन्दमयं अवस्था का चित्र ही अपने मानसिक जगत् में उपस्थित करे और धारणा करे कि वह पूर्ण स्वस्थ है तो वह अवश्य स्वस्थ हो जाता है। सद्‌विचार ही वह बीज है, जो जीवन को स्वस्थ, सुन्दर और तृप्त बना सकता है। इसलिए हम चित्त को स्थिर करने के लिए विषय वासनाओं को त्याग कर अपने मन में शुभ विचारों को स्थान दें। विषय-वासनाओं के त्याग से ही हम अपने मन को परमात्मा से जोड़ सकते हैं। हम अपने मन को शुभ संकल्पों वाला बनाएं तभी हम जीवन में सफलता को प्राप्त कर सकते हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

हिन्दी को रोजगार से जोड़ने की जरूरतः भारद्वाज

हिन्दी दिवस पर आर्य समाज द्वारा बीएलएम कालेज में कार्यक्रम

आर्य समाज नवांशहर की ओर से बीएलएम गर्ल्स कालेज में हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री प्रेम कुमार भारद्वाज थे जबकि पूर्व आईएएस अधिकारी ऊषा आर शर्मा व गुरू नानक देव युनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा सुधा जतिंदर मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुई। इस दौरान श्री प्रेम भारद्वाज ने हिन्दी को रोजगार के साथ जोड़ने की जरूरत पर बल दिया तथा कहा कि हिन्दी के पढ़ने से जब बच्चों को रोजगार मिलेगा तो खुद व खुद लोग हिन्दी पढ़नी शुरू कर देंगे। उन्होंने कहा कि बोली के रूप में हिन्दी कहीं आगे जा चुकी है, लेकिन भाषा के रूप में हमारी सरकारें ही इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं का विकास समय की जरूरत है।

कार्यक्रम के दौरान पूर्व आईएसएस ऊषा आर शर्मा एवं जीएनडीयू के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा सुधा जतिंदर ने कहा कि अंग्रेजी के पीछे भागने से हम अपनी भाषाओं को भूलते जा रहे हैं। हमारी सरकारों को उच्चशिक्षा के पाठयक्रमों को भारतीय भाषाओं में विकसित किया जाना चाहिए तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म कर देनी चाहिए। इस दौरान कालेज कमेटी की ओर से श्री प्रेम भारद्वाज को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में कालेज कमेटी के सेक्रेटरी श्री विनोद भारद्वाज ने सभी का आभार व्यक्त किया। मौके पर कालेज कमेटी के प्रधान डा. सीएम भंडारी, श्रीमती इंदुमति गौतम, सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, कालेज प्रिंसिपल मीनाक्षी शर्मा, आर के आर्य कालेज के प्रिंसिपल डा. एस के बारिया, संगीता तेजपाल, डीएएन कालेज की प्रिंसिपल डा. सरोज भल्ला, प्रि. राजिन्द्र सिंह गिल, प्रो. संजीव डाबर, विनय सोफट, विकास कुमार, संगीता तेजपाल, डा. अरूणा पाठक आदि उपस्थित थीं।

-अरविंद नारद, प्रचार मंत्री आर्य समाज, नवांशहर

www.thearyasamaj.org

शिक्षक दिवस

-प्रोफेसर स्वतन्त्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

5 सितंबर का दिवस शिक्षक दिवस के नाम समर्पित है। यह महान शिक्षा शास्त्री दार्शनिक और हमारे पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्लि राधा कृष्णन का जन्म दिवस भी है। डा. सर्वपल्लि राधा कृष्णन प्रख्यात दार्शनिक, शिक्षा-शास्त्री, संस्कृतज्ञ और राजनेता थे। वह राष्ट्रपति के पद पर भी सुशोभित रहे, उससे पूर्व राधा कृष्णन जी शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत थे। इन्होंने मद्रास के प्रेजीडेंसी कालेज में दर्शनशास्त्र का अध्यापन कार्य किया था। सन् 1936 से 1939 तक आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय में पूर्वी देशों के धर्म और दर्शन के 'स्पाण्डिन प्रोफेसर' के पद को सुशोभित किया। राष्ट्रपति बनने के उपरान्त उन्होंने अपने जन्म दिवस को सार्वजनिक रूप से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का परामर्श दिया। तब से प्रति वर्ष यह दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्र के निर्माता और राष्ट्र की संस्कृति के संरक्षक शिक्षक है। छात्रों के हृदय में, मन में संस्कार डालने वाला शिक्षक ही होता है। शिक्षक छात्रों के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने, उसे श्रेष्ठ नागरिक बनाने के दायित्व का निर्वहन करता है। शिक्षक छात्रों में एक ऐसी शक्ति का जागरण करता है जिससे वह छात्र समाज की भलाई-बुराई, हित-अहित, शुभ-अशुभ आदि को परखने में समर्थ होता है। यह शिक्षिक अर्थात् समाज के उस वर्ग को सम्मान देने तथा श्रद्धा विज्ञापित करने का दिन है। जोकि समाज को संस्कारवान पीढ़ी देकर एक सदृढ़ राष्ट्र की नींव डालता है।

हमारे जीवन में ज्ञान का सामर्थ्य ... सम्पन्नता का उजाला भर दें, हम सकारात्मक, सर्जनात्मक, ऊर्जा से भर दें, ऐसे गुरु के प्रति प्रत्येक निष्ठावान शिक्षार्थी को आजन्म ... ज्ञापित करनी ही चाहिए। गुरु ... उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है। संत ... के अनुसार गुरु का व्यक्तित्व कुछ ऐसा होना चाहिए।

"गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है,
गाढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट,
अन्त हाथ सम्हार दें, बाहर
भौरे चोट,"

गुरु का उतरदायित्व अनपढ़ शिष्य को सुगढ़ बनाना है, उसके एक-एक अवगुण को निकाल बाहर करना है। ऐसी स्थिति में उसे अनुशासन का कठोर आवरण भी धारण करना पड़ सकता है। अनुशासन, विद्यार्थी को मर्यादा में रखने का एक उपाय है, लेकिन सच्चा गुरू या अध्यापक यह जानता है कि उसे अपने विद्यार्थी से कब कैसे और कितना कठोर होना है। वह उसे संस्कारित करके समाज की समस्याओं से जूझने और उसे गलत रास्ते पर जाने से बचाता है।

एक सच्चे शिक्षक में अपने विद्यार्थी के व्यक्तित्व को उभारने की असीम शक्ति होती है। इसीलिए तो उसे साक्षात् "ब्रह्म" की उपाधि से भी विभूषित किया गया है।

"गुरूब्रह्मा गुरू विष्णु गुरूदेवों महेश्वर :
गुरू: साक्षात् परब्रह्म तस्मैं श्री गुरूवें नम:"

आज की युवा पीढ़ी स्फूर्तिवान, ऊर्जावान, मेधावी है। लेकिन उसमें अनुशासन का अभाव दिखाई देता है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में सब कुछ शीघ्रता से समेट लेने का भाव, दुनिया कर लो मुट्ठी में, अधिक से अधिक अमीर बनने की लालसा, बिना कुछ किए शिखर पर पहुँचने की लालसा ने आज के युवक व विद्यार्थी से अनुशासन व धैर्य को चुरा लिया है। जबकि धैर्य व अनुशासन के बिना कोई भी उपलब्धि टिकाऊ व सदृढ़ नहीं हो सकती।

आज का विद्यार्थी यदि अपने जीवन में स्थिरता व कुछ स्थायी प्राप्त करना चाहता है तो उसे विद्या का पिपासु तथा विनयशील होना ही पड़ेगा। विनयशील व्यक्ति स्वयं में अभाव का अनुभव कर सकता है, और अभाव ही व्यक्ति को सीखने तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

सच्ची शिक्षा कभी भी एक पक्षी विकास की समर्थक नहीं रही है। सच्ची शिक्षा जीवन मूल्यों में संतुलन कायम करके एक अच्छे संस्कारवान व्यक्तित्व का निर्माण करने में सक्षम है।

आज शिक्षा एक पक्षीय होती जा रही है, जोकि आज के युवक व विद्यार्थी में जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा, जीवन में स्थिरता तथा संतुलन कायम करने में असहाय सी दिखाई देती है। आज की शिक्षा का व्यवसायीकरण ऐसे नौजवानों को जन्म दे रहा है जो येन, केन, प्रकारेण धन उपार्जन करना चाहते है। आज नैतिकता और आत्म गौरव एवं राष्ट्र भक्ति का नितांत अभाव शिक्षक एवं विद्यार्थियों में देखने को मिल रहा है। नैतिक मूल्यों का दोनों में ही अभाव खल रहा है।

आज गुरु और शिष्य में नैतिक मूल्यों तथा मानवीय गुणों की क्षति होती जा रही है। शिक्षक का उद्देश्य व्यक्ति निर्माण न होकर, उसे वकील, डाक्टर तथा इंजीनियर बनाना ही रह गया है। शिक्षक जो कभी नैतिक मूल्यों की खान हुआ करता था आज खोखला नजर आ रहा है। आज शिक्षक की प्राथमिकताएं तथा उद्देश्य दोनों ही बदल गये है। जिससे राष्ट्र में अच्छे नागरिकों का अभाव व विचारों का दिवालियापन दिखाई देने लगा है। आज शिक्षक दिवस पर विद्यार्थियों व शिक्षकों को आत्म मंथन करना चाहिए। भारत दुनिया में मानवीय सभ्यता और संस्कृति के ध्वजवाहक के रूप में माना जाता है। भारत में शिक्षक के लिए गुरू शब्द का भी प्रयोग होता है। उपनिषदों के अनुसार 'गु' शब्द का अर्थ है 'अन्धकार' और 'रू' शब्द का अर्थ है 'निरोधक'। इस प्रकार अंधकार का निरोध करने वाले शिक्षक के लिए गुरू शब्द का प्रयोग उचित है। स्कन्दपुराण में 'रू' का अर्थ 'तेज' अथवा 'प्रकाश' है। अत: अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर कर, ज्ञान प्रकाश करने वाला केवल शिक्षक ही है।

वैदिक साहित्य में शिक्षक के लिए 'आचार्य' शब्द का प्रयोग करते हुए 'आचार्य देवो भव:' की घोषणा की है। आज के इस शिक्षक दिवस पर शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों को ही नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा एवं विद्या दोनों को ही अर्जित करने का संकल्प लेना चाहिए।

श्रावणी पर्व

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी आर्यसमाज, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर का श्रावणी पर्व वेद मंत्रों के साथ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। राकेश कुमार आर्य ने ब्रह्मापद से बोलते हुए बताया कि श्रावणी पर्व से सच्छास्त्रों का स्वाध्याय प्रारम्भ किया जाये। स्वाध्याय को जीवन का अंग बनाये तथा इस प्रवृत्ति को बढ़ाते जाये। यज्ञ के यज्ञमान अमोद कुमार आर्य सपत्नीक रहे। यज्ञ के आचार्य श्री राकेश कुमार आर्य ने बताया कि वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय करने से मन व इन्द्रियां संयमित होते है। अत: शरीर को निरोगता व मन को एकाग्रता प्राप्त होती है और आत्मा का उत्थान होता है। श्रावणी पर्व के महत्व को बताते हुए आर्यरत्न आचार्य गुरूदत्त आर्य ने कहा कि श्रावणी पर नये ब्रह्मचारी नया यज्ञोपवीत धारण कर पितृ ऋण, देव ऋण ऋषि ऋण आदि कर्त्तव्य के व्रतबन्धों से बंधा समझने लगता है। यज्ञोपवीत धारण कर ही विद्यार्थी को आचार्य कुल में लाया जाता है। यज्ञोपवीत से ही विद्यार्थी इससे प्रतिज्ञात और अधिकृत होता है। अत: यह व्रतबन्ध पर्व भी है। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री आनन्दपाल सिंह आर्य, डॉ० नरेशकुमार आर्य, बाबू आनन्दस्वरूप आर्य, ई० करण सिंह आर्य, ई० रणवीर सिंह आर्य, जितेन्द्र कुमार एड०, राजपाल सिंह चाहल ऐड०, देवी सिंह आर्य, देवी सिंह सिम्भालका आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री अनूप सिंह ऐडवोकेट ने ओ३म् ध्वज फहराकर किया।

कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज तलवाड़ा में 28-8-2013 को कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रात: 8 बजे से लेकर 9 बजे तक हवन यज्ञ हुआ। हवन के पश्चात् श्री अरुणा जी वेदालंकार के बहुत ही शिक्षाप्रद भजन श्री कृष्ण जी के जीवन पर हुए। श्रीमती कृष्णा देवी जी के भी भजन हुए। भजनों के पश्चात् पुरोहित परमानन्द जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रवचन दिया। आर्य समाज के सभी सदस्यों ने हवन यज्ञ किया और भजन और प्रवचन सुनें। शान्ति पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया।

-परमानन्द आर्य समाज तलवाड़ा

www.thearyasamaj.org

ज्योतियों का ज्योति मन

-ले० वेद प्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E कैलाश नगर, फाजिल्का

ओ३म् यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥
यजु. 34/1

शब्दार्थ-(यत्) जो (जाग्रतः) जागृत अवस्था में (दूरं उदैति) दूर-दूर तक चला जाता है और (सुप्तस्य) सुप्त अवस्था में भी (तथा एव) उसी प्रकार दूर-दूर तक जाने वाला (ज्योतिषां ज्योतिः) ज्योतियों का भी ज्योति, प्रकाश से भी अधिक गतिशील, प्रधान इन्द्रिय रूप (एकम्) एकमात्र (दैवं) दिव्य शक्ति सम्पन्न (मे मनः) मेरा मन (शिव संकल्पम्) शुभ संकल्पों वाला (अस्तु) हो।

हमारे शरीर के सभी कार्यों का संचालक मन है। यह जागते हुए, सोते हुए प्रत्येक अवस्था में हमारे कार्यों का संचालन करता है। यह मन शरीर पर आश्रित है। लेकिन मन को स्थिर करना साधारण काम नहीं। मन अत्यन्त शक्तिशाली है। बड़ा चंचल है। अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से कहते हैं-

चच्चलं हि मनः कृष्ण॥ हे कृष्ण। मन बड़ा चंचल है।

आइए इस विषय पर विस्तार से विचार करें। मन्त्र का पहला भाग है-

यज्जाग्रतो दूरमुदैति॥

यह मन जागते हुए भी बहुत दूर तक निकल जाता है। यह बड़ी तीव्र गति वाला है। इसकी तेज गति का क्या कहना ? यह लोक, परलोक, देश, विदेश, और अन्य अनेक स्थानों की यात्रा पर चल पड़ता है। मन को कहीं भी पहुंचने में देर नहीं लगती। यह राज दरबार में, पहाड़ों की चोटियों पर, नदी के किनारे, तीर्थ स्थानों पर, खेल के मैदान में, होटल में, बाजारों में, मेलों में, दुकानों में, पार्कों में घूमता रहता है। मन की क्रिया तो बड़ी तीव्र गति से होती है; जिसका समझना बहुत कठिन है।

हम बैठे सन्ध्या हवन कर रहे हैं लेकिन मन कहीं और फिर रहा है। अनेक बार तो मोबाइल ही ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। हम सन्ध्या हवन भूल जाते हैं। गुरू जी पाठ पढ़ा रहे हैं। प्रश्न पूछने पर छात्र खड़ा होकर छत की ओर ताकने लगता है क्योंकि उसका मन कहीं और घूम रहा था। वह कभी सिनेमा और कभी चाट-पकौड़े के बारे में सोचने लगता है। कभी मित्रों के साथ सैर-सपाटे की दुनिया में पहुंच जाता है। फिर पाठ कहां से समझ आए। मन्दिर में भक्ति करने बैठे हैं पर पूजा-अर्चना में मन नहीं लगता। ऐ भक्त! ज़रा सोच-

जो मनुवां चहुंदिशि फिरे, तो यह सुमिरन नाहि॥

अब मन्त्र के दूसरे भाग पर विचार करें-

सुप्तस्य तथैवैति॥

सोते हुए भी यह मन स्वप्न में इधर-उधर घूमता रहता है जैसे जागते हुए भटकता है। व्यक्ति पलंग पर पड़ा सो रहा है पर मन सपने देख रहा है। कहीं पार्टी चल रही है, कहीं रंगारंग हो रहा है, खेलकूद में मस्त है। आंख खुलती है तो अपने आपको बिस्तर पर पड़े हुए पाता है।

एक बार कपड़े का व्यापारी स्वप्न में कपड़े बेच रहा था। कपड़ा मापने के बाद जब फाड़ने की बारी आई तो अपनी धोती ही फाड़ दी। कपड़ा फटने की आवाज़ से पत्नी की आंख खुली तो बोली- ''क्या कर रहे हो जी।'' सेठ जी ने उत्तर दिया-''स्वप्न में कपड़ा बेच रहा था। फाड़कर ग्राहक को देना था और अपनी ही धोती फाड़ ली।'' यह है मन की गति!

कईयों को तो स्वप्न में चलने का रोग होता है। कई तो स्वप्न में चीखने, चिल्लाने और रोने लगते हैं, डर जाते हैं, बिस्तर पर उठकर बैठ जाते हैं, पसीने से तर हो जाते हैं। कभी हंसते हैं, कभी रोने लगते हैं। मनुष्य दिन में जागते हुए जैसा देखता और करता है वैसे ही रात्रि में स्वप्न आते हैं परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह उसी क्रम में हो जैसा जागते हुए देखा, सुना, किया या घटित हुआ था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सोए हुए आदमी का मन भी दूर-दूर तक तरह-तरह की यात्राएं और कार्य करता है। अब अगले भाग पर विचार करें-

ज्योतिषां ज्योतिः॥

यह मन ज्योतियों का भी ज्योति है। वस्तुतः बाहरी प्रकाश तो केवल इन्द्रियों को प्रकाशित करता है। यदि मन न हो तो यह बाहरी प्रकाश किसी चीज़ को भी प्रकाशित नहीं कर सकता। त्वचा को स्पर्श का अनुभव तब तक नहीं हो सकता जब तक मन उसके साथ न जुड़ा हो। कई बार व्यक्ति ज़ोर-ज़ोर से पुकारता है फिर भी श्रोता सुन नहीं पाता क्योंकि उसका मन कहीं और लगा होता है। यदि किसी काम में मन नहीं लगा तो उस विषय का इन्द्रिय से सम्पर्क होने पर भी ज्ञान नहीं हो सकता। सबके सब ज्ञान के साधन इस अन्तर्ज्योति अर्थात् मन में एक हो जाते हैं। यह मन दिव्य ज्योतिर्मय है।

हमें जो वस्तु अच्छी लगती है उस पर ध्यान शीघ्र ही केन्द्रित हो जाता है। बच्चे का मन पढ़ाई में नहीं लगता पर बन्दर, भालू का नाच, सिनेमा के चित्र, मोबाइल पर गेमें देखने और खेलने में मन लग जाता है। खाना खाना भी भूल जाता है। मां आवाज़ लगाती ही रह जाती है। परीक्षा में प्रश्न हल करते हुए कब तीन घंटे निकल जाते हैं, पता ही नहीं चलता। मां बीमार बच्चे की हल्की सी आवाज़ से जाग जाती है। कहा जाता है कि एक कंजूस व्यक्ति यदि गहरी नींद में सो रहा हो तो उसे जगाने का सबसे सरल तरीका है, उसके हाथ में रुपया रख दीजिए। वस्तुतः मन हमारे कार्यों का प्रकाशक है। मन के द्वारा ही वेद की ऋचाएं प्रकाशित हुईं। महर्षि बाल्मीकि, व्यास, कालिदास आदि ने मन को एकाग्र करके ही काव्य-रचना की थी। आओ, हम भी इस ज्योतियों की ज्योति मन को शुद्ध, पवित्र, उज्जवल और एकाग्र करें।

मन्त्र के अन्त में प्रार्थना की गई है-

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

भगवन्! मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

इन्द्रियों में मन की प्रधानता है। अतः जब मन शुद्ध, पवित्र होगा तो कार्य भी शुद्ध होंगे। मन की सफलता शुभ संकल्प पर निर्भर है। संकल्प ही मन का सार है। संकल्प-शक्ति को दृढ़ बनाकर मनुष्य संसार के महान् कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है। शक्तिशाली, आत्मविश्वासी व्यक्ति जानता है कि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं, कोई विपत्ति नहीं जो रास्ता रोक सके। यह शिव संकल्प हमारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण कर सकता है। यदि मन में कोई बुरे विचार आएं तो बलपूर्वक कह दो- ''ऐ मेरे मन के पाप! तू दूर हट, बाहर निकल। मैं तुझे नहीं चाहता। मेरे पास मत आ।'' हमेशा ध्यान रखो किसी बुराई के सामने नतमस्तक नहीं होना। दृढ़ संकल्प से ही विजयश्री प्राप्त होती है। शिव-संकल्प की भावना से नवजीवन प्राप्त किया जा सकता है। अतः हम नित्य ही भगवान् से प्रार्थना करें-

''हे परमात्मन् देव! मे मनः संकल्पमस्तु अर्थात् मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।''

आर्य कालेज धूरी प्रगति के पथ पर अग्रसर

आर्य कालेज धूरी के प्रधान जसवीर रत्न जी व मैनेजर पवन कुमार गर्ग जी की देख रेख में आर्य कॉलेज दिन प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ़ रहा है। वर्ष 2012 में विद्यार्थियों की कुल जनसंख्या 263 थी लेकिन वर्ष 2013 में विद्यार्थियों की कुल जनसंख्या 373 हो गई है। हम पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आगे आने वाले समय में विद्यार्थियों की जनसंख्या 500 तक पहुंचेगी और सारे विद्यार्थी वैदिक धर्म से ओत-प्रोत होंगे।

-पंडित अमरेश शास्त्री पुरोहित आर्य समाज धूरी

दयानन्द मठ दीनानगर की हीरक जयंती

दयानन्द मठ दीनानगर की हीरक जयंती 18, 19, 20 अक्तूबर 2013 को बड़ी धूमधाम से मनाई जा रही है। 1937 चैत्र शुल्क प्रतिपदा को लौह पुरुष फील्ड मार्शल स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज ने दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की थी। इस तरह इस मठ को स्थापित हुये 75 वर्ष होने जा रहे हैं। इसलिये सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि वह इस हीरक जयंती समारोह में बढ़ चढ़ कर भाग लें।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज मेरी जीवनधारा

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी सभामंत्री से श्री डाक्टर देवेन्द्र जी से आर्य समाज सम्बन्धी वार्तालाप जो पाठकों की जानकारी के लिए दिया जा रहा है। आशा है पाठक इस वार्तालाप से लाभान्वित होंगे।
-सम्पादक

(गतांक से आगे)

यह तो कमाल की न्याय प्रणाली का आदर्श प्रस्तुत किया गया है।

पंडित जी-और सुनें! इसी समुल्लास में किसान को राजाओं का राजा अभिहित किया गया है और राजा को किसान का रक्षक कहा गया है। राज-धर्म के सम्बन्ध में लिखा गया है सरकार और शासन को अधिक प्रभावशाली ढंग से संचालित करने हेतु किसान, कृषि, कीर्ति तथा श्रमिक की समस्याओं का समाधान करने की व्याख्या की गई है।

दसवां समुल्लास सदाचार, व्यवहार, खानपान सम्बन्धी है। हितकारी पशुओं की हिंसा वर्जित हैं एवं यह भी उल्लेख मिलता है कि विदेश जाने से सदाचार नष्ट नहीं होता। अंतिम चार समुल्लासों में विश्व के विभिन्न मत-मतांतरों, धर्मों, सम्प्रदायों की प्रमाण सहित एवं निष्पक्ष समीक्षा की गई है।

फिर तो अवसर निकाल कर मैं भी इसे पढ़ूंगा।

पंडित जी-विषय मैंने मोटे तौर पर आपको बता दिए हैं। आप पढ़कर देखें तो सही। अच्छा सुनें! पंडित गुरुदत्त 1886 में जिन्होंने विश्व-विद्यालय में रिकार्ड अंकों में एम. एस. सी. भौतिकी (फिजिक्स) में पास की थी, उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश 18 बार पढ़ा था। उन्होंने बताया कि उन्हें हर बार नई ताज़गी मिलती थी।

जैसे आजकल डेरावाद (मठवाद) का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। क्या आर्य समाज जीवित देहधारी गुरु में विश्वास रखता है ?

पंडित जी-वैदिक ग्रंथों के अनुसार ईश्वर व साधक के मध्य कोई दूत नहीं हो सकता। ईश्वर ही मानवों का उपासनीय देव है। महर्षि का संदेश यह है-'मैं कोई नवीन पंथ आरम्भ करके देहधारी की गद्दी का मठ नहीं बनाना चाहता। मैं तो मत-मतांतर वादी मठों से लोगों को मुक्त कराना चाहता हूं। बाकी ईश्वरीय शक्ति के सम्बन्ध में मैं पहले ही बता चुका हूं।' ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म' है जो अजर, अमर, निराकार एवं सर्वव्यापक है। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभावानुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधार करना ही नाम स्मरण है क्योंकि ईश्वर की भक्ति सीधे करनी है, इसलिए आर्य समाज न किसी देहधारी मध्यस्थता को स्वीकारता है और न ही मूर्ति पूजा, कब्र पूजा, जड़ पूजा आदि में विश्वास रखता है।

क्या वैदिक संस्कृति नर्क-स्वर्ग में विश्वास रखती है ?

पंडित जी-वैदिक ग्रंथ बताते हैं नर्क-स्वर्ग का कोई भी अस्तित्व नहीं है। जहां सुख है वहां स्वर्ग है और जहां दुःख है वहां नर्क है। यह भी सिद्धान्त है कि मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्र है परन्तु फल के लिए परतंत्र है। फल अपनी इच्छानुसार नहीं मिलता है। शुभ कर्मों के फलस्वरूप सुख मिलता है और अशुभ कर्मों से दुःख। ईश्वर मनुष्य के पापों को कभी भी क्षमा नहीं करता, पापों का फल तो भोगना ही पड़ता है। दुखों के भोग को नर्क सुखों के आनन्द को स्वर्ग कहा गया है।

आर्य समाज अपना हर कार्य-क्रम हवन-यज्ञ से ही प्रारम्भ करता है, इसका क्या कारण है ?

पंडित जी-यह वैदिक विधान है। वैदिक संस्कृति में तो हर मानव को पांच महायज्ञ करने के लिए कहा गया है।

1. ब्रह्म-यज्ञ अर्थात् ईश्वरोपासना करना
2. देव-यज्ञ अर्थात् हवन करना
3. पितृ-यज्ञ अर्थात् माता-पिता की सेवा करना।
4. अतिथि-यज्ञ अर्थात् महात्मा, विद्वान, उपदेशक आदि का सम्मान एवं सेवा करना।
5. पंडित जी अपनी स्मरण शक्ति पर बल दे रहे थे। (कुछ क्षण पश्चात्) बलि वैश्व देव यज्ञ, इसका तात्पर्य है कि पशु-पक्षी, अनाथ, विकलांग आदि को भोजन देना। इसलिए माता-पिता, विद्वान, महात्मा अतिथि पूजनीय हैं। माता-पिता से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं हो सकता तथा गायत्री से श्रेष्ठ कोई मंत्र नहीं है।

आपने पहले यह बताया है कि आर्य समाज छुआ-छूत एवं रंग-भेद का विरोधी है, क्या आर्य समाज वर्ण-व्यवस्था में भी विश्वास नहीं रखता। आप किस प्रकार के समाज की कल्पना करते हो ?

पंडित जी-वैदिक ग्रंथानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र जो वर्ण हैं वे जन्मानुसार नहीं अपितु कर्मानुसार हैं। इस प्रकार आर्य समाज जोड़ने का कार्य करता है तोड़ने का नहीं। इसी प्रकार चार आश्रमों के सम्बन्ध में भी वैदिक ग्रंथों में बहुत स्पष्ट कहा है कि 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना सभी के लिए अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त 50 वर्ष तक गृहस्थ, 75 वर्ष तक वानप्रस्थ तथा अन्तिम सन्यास। वानप्रस्थ एवं सन्यास का पालन व्यक्ति की योग्यता, बल, मानसिकता एवं आत्मिक स्थिति पर निर्भर करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वस्त्र परिवर्तन से कोई सन्यासी नहीं हो जाता। इसलिए आर्य समाज ऐसे समाज की संरचना के लिए यत्नशील रहता है जो बिना किसी जात-पात, भेद-भाव के हो तथा समानता का समाज हो। जैसे नारी को भी पुरुष के समान अधिकार दिलाने में आर्य समाज की भूमिका प्रशंसनीय रही है।

कैसे ?

पंडित जी-जिन कारणों से नारी का समाज में अपमानजनक स्थान था उन्हीं कारणों का आर्य समाज ने डट कर विरोध किया। जैसे शिक्षा के क्षेत्र में नारी का पिछड़ा रहना, बाल-विवाह, बे-जोड़ विवाह, बेमेल विवाह, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा, वैश्यागमन आदि के विरुद्ध लगातार लड़ाई लड़कर नारी को सम्मानीय स्थान दिलाया है। विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया है इत्यादि क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने समाज को एक संदेश दिया है-"यत्र नारी पूज्यते, तत्र रम्यते देवता।" जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं।

शायद यह बात पहले भी कर चुके हैं। अच्छा, अब आप यह बताएं जैसे आप आर्य-समाजी हैं और आप अपने परिचितों के कार्यक्रमों या उत्सवों में जाते हैं और आजकल, मांस, मदिरा, मछली आदि का सेवन सामान्य सी बात हो गई है। आप यानि कि आर्य समाजी भोजन को किस रूप में लेते हैं ?

पंडित जी-आपको विदित ही है कि ऐसे कार्यक्रमों में जाना तो पड़ता है। परन्तु हमें क्या, कोई कुछ भी खाए-पिए, परन्तु एक आर्य समाजी के लिए इन सबका सेवन महा पाप है। शाकाहारी भोजन सर्वोत्तम है। मैं सदा शाकाहारी ही रहा हूं।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द जी द्वारा क्या नए धर्म की स्थापना की गई ?

पंडित जी-सत्य तो हमेशा एक ही होता है। यह पुराना या नया क्या होगा, धर्म तो आदि काल से एक ही है, वैदिक धर्म। महर्षि दयानन्द जी ने तो धर्म के नाम पर उत्पन्न हुए भ्रम को दूर किया है। लोग मतों, सम्प्रदायों और महजबों को धर्म समझ बैठते हैं। हर सम्प्रदाय की अपनी-अपनी रूढ़िवादी परम्पराएं होती हैं। इन भिन्न-भिन्न परम्पराओं के कारण सम्प्रदायों में परस्पर मतभेद, लड़ाई-झगड़े, घृणा-क्रोध इत्यादि उत्पन्न होता है। यही कारण है कि इन भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों से सम्बन्धित धार्मिक स्थानों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। परन्तु अशान्ति, भ्रष्टाचार, आतंक, हिंसा, झूठ आदि घटने की अपेक्षा बढ़े हैं। राष्ट्र एवं समाज में खाई बढ़ी है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने यह घोषणा की थी कि उनके देहावसान के अनन्तर उनकी स्मृति में किसी प्रकार के स्मारक की सृजना न की जाए।

इसका तात्पर्य यह निकाला जा सकता है कि दयानन्द जी ने वैदिक धर्म को पुनः नए रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है ?

पंडित जी-जी हां, आप यही कह लीजिए। **(क्रमशः)**

www.thearyasamaj.org

शोक समाचार

बड़े दु:खी हृदय से यह समाचार दिया जा रहा है कि आर्य समाज तलवाड़ा के प्रधान श्री अमर नाथ जी का निधन 18-8-2013 प्रात: 8.30 बजे जालन्धर के अस्पताल में हो गया। वह 8 महीने से बीमार चले आ रहे थे। उनके बेटे रजनीकान्त और परिवार ने बहुत इलाज करवाया परन्तु वह ठीक न हो सके। 19-8-2013 को उनका अन्तेष्टि संस्कार वैदिक रीति से श्री अरुण जी वेदालंकार ने तलवाड़ा में करवाया। 30-8-2013 को प्रात: हवन उनके घर पर पुरोहित परमानन्द जी और अरुण वेदालंकार ने करवाया। दो बजे से तीन बजे तक आर्य समाज में श्रद्धांजलि का कार्यक्रम था जिसमें श्री मनोहर लाल जी, किशोरी लाल जी ने श्रद्धांजलि के उपलक्ष्य में विचार दिए। श्री अरुण जी वेदालंकार जी ने भजन गाए। रस्म पगड़ी के पश्चात् शान्ति पाठ किया गया।

-पुरोहित परमानन्द आर्य समाज तलवाड़ा

यमुनानगर के आचार्य का सम्मान

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय गुरुकुल शादीपुर के आचार्य डॉ० राज किशोर शास्त्री एम० ए० "दर्शन शास्त्र" एवं पी० एच० डी० को दिनांक 13 अगस्त 2013 को हरियाणा प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने हरियाणा राज्य भवन चण्डीगढ़ में **"विद्या मार्तण्ड पं० सीताराम शास्त्री आचार्य सम्मान"** से श्री राज किशोर जी को विभूषित किया। जिसमें श्री पहाड़िया जी ने 51000/- इकावन हजार रुपए का चेक सहित दुशाला प्रशस्ती पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर शिक्षा जगत का उच्च उपलब्धि प्राप्त करने पर उनका मान बढ़ाया।

इस उपलब्धि पर यमुनानगर निवासियों को श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर की ओर से बहुत-बहुत बधाई हो।

-श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर, यमुनानगर

श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर खन्ना रोड़ समराला ज़िला लुधियाना में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य पर 1 सितम्बर 2013 दिन रविवार को कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जिसमें सर्वप्रथम गायत्री महायज्ञ प्रात: 7 बजे से 8 बजे तक किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पुरोहित पण्डित राजेन्द्र व्रत शास्त्री थे।

यज्ञ के पश्चात् स्त्री आर्य समाज के सदस्यों के भजन हुए। तत्पश्चात् शास्त्री राजेन्द्र व्रत जी के मुखारविन्द से श्री कृष्ण महाराज के जीवन का वृतान्त मधुर स्वर से श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ। भजन व प्रवचन का आयोजन 8 बजे से 10 बजे तक हुआ। मुख्य वक्ता साध्वी विशोकायती जी ने गीता तथा वेदों पर आधारित अपने विचार प्रकट किए। अन्त में ऋषि लंगर वितरित किया गया।

इस अवसर पर प्रधान राजकुमार मन्त्री अम्बरेश कुमार आर्य, सोम प्रकाश आर्य, गगनदीप, जयदीप, रमन गुप्ता, शिवम् अभिषेक, जस्सी, सीमा रानी, मीना, रीचा, कंचन, श्रुति आदि आर्य सज्जन उपस्थित थे।

-अम्बरेश कुमार आर्य

जन्माष्टमी पर विशेष

27-8-13 को स्कूल के हाल में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ किया गया जिसे श्री श्रवण बत्रा जी ने बड़ी श्रद्धा से व्याख्या जिसमें स्कूल का स्टाफ और सभी विद्यार्थी शामिल थे और कई विद्यार्थी और स्टाफ, सदस्य यज्ञमान बने। जिन्होंने बड़े मनोयोग से यज्ञ किया और आहुतियां डालीं। इस अवसर पर स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के मैम्बर्स भी उपस्थित थे जिनके नाम इस प्रकार हैं स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार जी, वजीर चन्द, वेदपाल, रमाकान्त महाजन, सुरिन्द्र आर्य यज्ञ के अन्त में स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने आए हुए मैम्बर्स का धन्यवाद किया और यज्ञमानों को आशीर्वाद दिया। शान्तिपाठ के पश्चात् सबको प्रसाद बांटा गया जो कि वैद्य बैणी प्रसाद जी की तरफ से था।

-सुनीता मलिक

शोक सभा

स्त्री आर्य समाज औहरी चौक बटाला जिला गुरदासपुर की प्रधाना श्रीमती संतोष आनन्द जी का दिनांक 27 अगस्त 2013 को निधन हो गया। उनकी मृत्यु पर बटाला की सभी आर्य शिक्षा संस्थाएं बंद रहीं। पूज्य माता जी जीवन पर्यन्त आर्य समाजों के कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेती थी। वह प्रतिदिन आर्य समाज जाया करती थीं। उनके चले जाने से आर्य समाज बटाला को भारी क्षति पहुंची है। उनका श्रद्धांजलि समारोह 30 अगस्त 2013 को आर्य समाज औहरी चौक में किया गया। इस अवसर पर श्री प्रविन्द्र जी चौधरी, श्री विजय अग्रवाल जी, श्री बलविन्द्र मेहता जी, सोनिया सच्चर जी, पवन शर्मा जी, इन्द्रजीत आर्य जी ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी।

आर्य समाज अबोहर में भजन संध्या का आयोजन किया गया

आर्य समाज अबोहर के नव सभागार का उदघाटन समारोह व भजन संध्या तथा ग्यारह कुण्डीय हवन यज्ञ का आयोजन दिनांक 18 व 19 अगस्त 2013 को बड़े धूम-धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम आर्य समाज के प्रांगण में ग्यारह कुण्डीय विश्व-शान्ति यज्ञ किया गया जिसमें शहर के ग्यारह परिवारों ने यजमान बनकर पंडित जन्माजय शास्त्री जी के नेतृत्व में यज्ञ को सम्पन्न किया।

यज्ञ के पश्चात् फिरोजपुर से पधारे हुए आर्य जगत के प्रसिद्ध भजन गायक श्री विजयानन्द जी ने दोनों दिन की बैठक में अपने सुमधुर व शिक्षाविद् भजनों के माध्यम से सभी श्रोतागणों को मंत्रमुग्ध कर दिया तथा उनके भजनों का सभी ने आनन्द लिया।

इस शुभ अवसर पर आर्य समाज के सभी अधिकारी तथा सदस्यगण व नगरवासियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इसके साथ ही शान्ति पाठ व ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-आर्य समाज, अबोहर)

अपील

इस समय हिमाचल में कई दिनों से चल रही मूसलाधार बारिश के कारण महर्षि दयानन्द मठ चम्बा में एक बहुत बड़ी आपदा उपस्थित हो गई है जिसके कारण हमारे सभी आगामी कार्यक्रम जिसमें आंखों का कैम्प, शारद यज्ञ का कार्यक्रम बाधित हो गये हैं। यज्ञशाला के सामने वाले मैदान का सारा का सारा डंगा (दीवार) गिर गई है। सभी कार्यक्रमों का केन्द्र यही मैदान था। इसी में विद्यालय के बच्चे खेलते रहते हैं। इसी में इनकी प्रात:कालीन प्रार्थना होती है। यह सभी कार्य दीवार के गिरने से बाधित हो गये हैं। पिछले दो तीन वर्षों से इस मैदान को आगे पिल्लर देकर बड़ा करने की भी योजना चल रही है। अर्थाभाव में उस पर कार्यवाही नहीं हो पा रही है। यही सोच कर समय निकाल रहे थे कि चलो इस साल नहीं तो अगले साल इस पर कार्यवाही करेंगे। पर अब अकस्मात ही भारी बारिश के कारण इस पर काम जरूरी हो गया है। अन्यथा हानिल हो जायेगी, बिल्डिंग को भी खतरा है। अत: आप लोगों से अनुरोध करने के लिये तत्पर हुआ हूं। आश्रम की गतिविधियां चलती रहें इसके लिये इसका सुव्यवस्थित रूप से निर्माण व विस्तार जरूरी है। लगभग 10 लाख का खर्चा अनुमानित है। इसके लिये यथासंभव सहयोग देकर इस कार्य को पूरा कराने का उपक्रम आप लोग करें। संस्था आप लोगों की है। हम चौकीदार हैं। सूचना देना हमारा कर्त्तव्य बनता है उस पर कार्यवाही तो आप लोगों ने ही करनी है। अस्तु अक्तूबर मास में मठ का वार्षिक उत्सव व शारद यज्ञ भी था उसे अब सरस्वती होतृ सदन में करने का विचार कर रहे हैं। समय सीमा तो पूर्ववत ही रहेगी पर बैठने के लिये स्थान संकुचित होगा। आहुतियां डालने के लिये बाहर आंगन में प्रतीक्षा में बैठना पड़ेगा। शेष जैसी ईश्वर की इच्छा। रास्ता उसी ने दिखाना है। कार्य उसी ने सफल करना है। हम और आप तो निमित मात्र हैं और हमें निमित मात्र बनने के लिये तत्पर रहना चाहिये। ईश्वर सबका कल्याण करे।

-आचार्य महावीर उपाध्यक्ष-दयानन्द मठ चम्बा

www.thearyasamaj.org

वेद वाणी

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वां अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा॥ -ऋ० १/२५/११

विनय-इस संसार में हम बहुधा आश्चर्यचकित कर देने वाली घटनाएं होते देखा करते हैं। इनका करने वाला कौन है ? वैसे तो प्रतिदिन होने वाली बातों को भी यदि हम ध्यान से देखें तो हमको उनमें बड़ी अद्भुतता दिखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तुएं हैं जिनका परिवर्तन हम रोज़ सायं-प्रातः देखते हैं। नन्हें-से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना; अभी चलते-फिरते, हंसते खेलते दिखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि फिर वह कभी न जग सकेगा; जीव से जीव पैदा हो जाना-ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं? परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैंकड़ों शहर बर्बाद हो जाते हैं, भूकंप आते हैं, बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य, सितारे की तरह ऊंचा, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है, तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो? सिद्ध साधु-सन्तों द्वारा हुई चकित कर देने वाली बातों को देखो? ये सब संसार के एक से एक बढ़ करके अद्भुत हैं। इन सब अनुभवों का करने वाला कौन है ? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या संघशक्ति है; या कुछ भी नहीं है, केवल प्रकृति का खेल है। पर जो "चिकित्वान्" (जानने वाले) हैं उन्हें तो सब तरफ इन अद्भुतों का करने वाला, वही इन्द्र (परमेश्वर) दिखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दिखते हैं। इन सब विविध आश्चर्यों को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो "गूंगे को वाचाल करने वाले और लंगड़े को भी पहाड़ लंघाने वाले" हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं, वे सब प्रभु की ही हुई थी; कल जो अद्भुत घटना होने वाली है, कोई तख्ता पलटने वाला है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखने वाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते। वे अद्भुत से अद्भुत घटना में भी कार्य-कारण भाव को देखते हैं।

अतः हे मनुष्य? संसार के इन आश्चर्यों को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्ता को पहचानो? उस नट को पहचानो जो कि संसार को यह अद्भुत नाच नचा रहा है। **-साभार वैदिक विनय, प्रस्तुति श्री रणजीत आर्य**

लुधियाना में अध्यापक दिवस

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में अध्यापक दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बच्चों ने अध्यापक दिवस पर भाषण प्रस्तुत किया तथा सर्वपल्ली डॉ० राधा कृष्णन जी के जीवन पर प्रकाश डाला जिसका विषय था कि अध्यापक समाज के सृजन में महत्त्वपूर्ण योगदान डालता है और अध्यापक के बिना कोई भी समाज या देश तरक्की नहीं कर सकता। इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले विद्यार्थियों को इनाम देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्कूल की प्रिंसीपल सुनीता मलिक ने बच्चों को कहा कि उन्हें अपने अध्यापकों का सत्कार करना चाहिए और उनकी दी हुई शिक्षाओं का आदर करना चाहिए। स्कूल के प्रधान जी ने भी अपने भाषण में कहा कि बच्चों आप ही देश का भविष्य हैं और आपको अपने अध्यापकों का कहना मानकर उनके दिखाए गए मार्ग पर चलना चाहिए। इस अवसर पर स्कूल की कमेटी के मैम्बर वेदपाल जी व भंडारी जी भी उपस्थित थे। बच्चों ने सबको फूल देकर सबका सम्मान बढ़ाया।

-सुनीता मलिक

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।